Issue No. 1 August – December, 2024 Volume - 3

PTEC

NEWSLETTER

अनुक्रमणिका

पेंटिंग क्लास
शिक्षक-दिवस
माइक्रो-टीचिंग
टीचिंग प्रैक्टिस
ब्रिटो डे
धान-कटनी
जेवियर डे
क्रिसमस गैदरिंग

संपादक मण्डल
दीपक बिलुंग
अनिशा कुजूर
गोडविन मिंज
रिया रितिका हेंब्रोम

क्रिसमस की खुशी

क्रिसमस हम प्रत्येक जन के लिए खुशी का संदेश लेकर आता है। इस दिन हम हमारे मुक्तिदाता येसु मसीह का जन्मोत्सव मनाते हैं और खुशियाँ बांटते है, क्योंकि ईश्वर भक्तों के लिए इस धरती पर आए।

किसी राजा ने एक दिन अपने मंत्री से पूछा कि अगर भगवान सर्वशक्तिशाली है, सर्वव्यापी है और सर्वज्ञानी है, अपने शब्द मात्र से सबकुछ कर सकते है, तो अवतार लेकर इस धरती पर क्यों आते है? मंत्री चुप रहा। तब राजा ने अपने मंत्री से कहा कि इस सवाल का जवाब ढूंढ़ कर लाना वरना सर कटाने के लिए तैयार रहना। दरबार खत्म होने के बाद मंत्री सीधा उस नौकरानी के पास गया, जो राजा के बच्चे की ढेखभाल करती थी। मंत्री ने उससे कहा कि जब शाम को हमेशा की तरह राजा अपने बच्चे के साथ खेलने के लिए आयें, तब तुम किसी बहाने बच्चे की जगह उसके जैसे दिखने वाले खिलौने को तालाब में गिरा देना। नौकरानी ने हामी भर दी. योजनानुसार नौकरानी ने बच्चे को तालाब में गिरा दिया. राजा बिना एक क्षण देरी किए तुरंत उसे बचाने के लिए तालाब में कूद पड़ा. लेकिन जैसे ही मंत्री के नाटक का पता चला, उसने मंत्री को कैद करने का हुक्म दिया. मंत्री ने भी बिना क्षण देरी किए कहा कि यह आपके उसी सवाल का जवाब है, जो आपने मुझसे पूछा था. आपके पास इतने सारे नौकर हैं, फिर भी आप अपने चहेते बच्चे को बचाने के लिए खुद ही पानी में कूदना बेहत्तर समझा. बस इसी तरह भगवान भी अपने चहेते लोगों के लिए, उन्हें मुसीबत से बचाने के लिए धरती पर अवतरित होते है. यह उनका प्यार ही है,जो उन्हें धरती पर खींच लाता है.

क्रिसमस की कहानी भी यही है. ईश्वर ने संसार से इतना प्रेम किया कि उसे बचाने के लिए अपने एकलौते पुत्र को भेज दिया. (संभार: फा.अशोक कुजूर,चेरे)

संपादक

ड्रॉइंग और पेंटिंग

"चित्रकला एक ऐसी कला है जो हर किसी के वश की बात नहीं है, जब कोई दिखा दे अपनी चित्रकारी तो कोई उसे निहारते नहीं थकते हैं।"

हमारे महाविद्यालय में इसी चित्रकला के गुण को निखारने के लिए सर अब्राहम के द्वारा तीन दिवसीय चित्रकारिता का क्लास दिया गया। इस दौरान सर ने हमें ग्राफ विधि द्वारा चित्र बनाना सिखाया। शुरुआत में मैं सोचती थी कि कैसे एक आदमी का चित्र बनाया जाता होगा? क्योंकि मैं जब किसी आदमी का चित्र बनाती थी तो आँख-नाक ऊपर-नीचे बन जाता था। जो दिखने में काफी मज़ाकिया लगता था।

लेकिन सर के अथक योगदान से मुझे इसमें सफलता मिली। मैं सर द्वारा बताये गए नियम को ध्यान से सुनी और उसी के अनुरूप चित्र बनाना शुरू की। जब मेरे द्वारा पूरा चित्र बनके तैयार हुआ, तो मैं बहुत खुश थी, क्योंकि मैं बहुत ही सुंदर आदमी का चित्र बनायी थी। मेरे अगल-बगल बैठे सभी प्रशिक्षणार्थी का कहना था कि मैं सुंदर चित्र बनायी हूँ।

इस तरह से यह चित्रकारिता का क्लास मेरे लिए बहुत ही फायदेमंद रहा।

प्रिया कुल्लू
द्वितीय वर्ष 'ब'

कला प्रदर्शन का अवसर

महाविद्यालय में चित्रकला की कक्षाएं सर अब्राहम धान के नेतृत्व में दी गयी। हमारे लिए तीन दिन बहुत ही खास और फायदेमंद रहा। हमने तीन दिनों में अपने अंदर छुपे कला को पहचानने की कोशिश की और अपनी कला को प्रदर्शित करने का पूरा प्रयास किया। सर अब्राहम ने हमें तस्वीर में ग्राफ तैयार करके उसे हूबहू अपने ड्रॉइंग कॉपी में चित्रकारी करना सिखाया। साथ ही, उसे पेंटिंग करना भी सिखाया। शुरुआत में, हमारे लिए यह कार्य बहुत ही कठिन महसूस हुआ, पर थोड़ी कोशिश के बाद हम सबने कर दिखाया। मेरी चित्रकारी मुझे बहुत ही अच्छी लगी। एक पल के लिए तो मैं अपने ऊपर यकीन ही नहीं कर पा रही थी। बार-बार मन में एक ही सवाल उठ रहा था- "क्या वकाई में मुझमें चित्रकारी करने की कला है?" जैसे ही मेरे मन में सवाल उठते थे, तभी अंदर से आवाज आती महसूस होती थी- "हाँ, बिलकुल! तुम भी एक चित्रकार हो। बस तुम्हें थोड़ी सी और मेहनत करनी है। फिर तुम्हें चित्रकार बनने से कोई नहीं रोक सकता।" इन तीन दिनों ने मेरे अंदर छुपी कला को निखारने का मौका दिया है।

"चित्रकला कविता है जिसे महसूस करने की बजाय देखा जाता है और

कविता एक पेंटिंग है जिसे देखने की बजाय महसूस किया जाता है।"

असरीता एक्का
द्वितीय वर्ष 'ब'

"होठों पे मुस्कान थी, मन में उत्सुकता थी
न जाने कब से बेसब्री थी, ड्रॉइंग क्लास के शुरुआत की।"

ड्रॉइंग क्लास का पहला दिन था। मन में बस यही एक बात थी उत्सुकता की, कि आज ड्रॉइंग बनाने में कितना मजा आएगा। सर के आने के बाद, उनके द्वारा बनाए गए ड्रॉइंग को हम सबने ड्रॉइंग कॉपी में बनाना प्रारम्भ किया। हम सबने अलग-अलग, टेड़ी-मेड़ी आकृतियाँ बनाई। एक-दूसरे के बनाए हुए ड्रॉइंग को देखकर हँस-हँस के पेट में दर्द ही हो गया, क्योंकि न जाने कितने ही दिनों के बाद हम सबने इतने मन-ध्यान से ड्रॉइंग बनाया होगा। सचमुच स्कूल के वो बीते पल याद आ गए जैसे अपने क्लास के सभी दोस्त मिलकर बनाया करते थे।

दूसरे दिन हमने लड़की का ड्रॉइंग बनाया। अपने हुनर को दाँव पे लगाकर नया-नया चेहरा बनाया। मजेदार बात तो यह थी कि हममे से बहुतों ने उस दिन से पहले कभी पेंट-ब्रश नहीं पकड़ा था। लेकिन भी हमने काफी अच्छा पेंटिंग किया। इस प्रकार यह पेंटिंग क्लास मेरे लिए बहुत ही मजेदार एवं सीखने योग्य था।

छाया रानी धान
प्रथम वर्ष 'ब'

चित्रकला में मेरा पहला प्रयास

इस तीन दिन में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं पहली बार चित्र बनाई। पहले दिन जब सर चित्र बनाने के तरीके सीखा रहे थे तो मुझे लगा कि मुझसे नहीं होगा। लेकिन मैंने बहुत कोशिश की और काफी प्रयास के बाद मैं सुंदर सा चित्र बना पायी। मुझे काफी खुशी महसूस हुई। इसके बाद रंग भरना भी सीख गयी। मैं कभी नहीं सोची थी कि मुझसे इतना अच्छा चित्र बन सकता है। मुझमें चित्र बनाने के गुण हैं उसे मैं समझ नहीं पाती, अगर हमारे महाविद्यालय में चित्रकला के लिए क्लास नहीं रखा जाता। सर ने हमें चित्र बनाने और रंग भरने बहुत ही अच्छे तरीके से सिखाया।

अस्मिता लकड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

चित्रांकन कक्षाएं

तीन दिवसीय चित्रांकन कक्षाएं जिसे मैं कभी भूल नहीं सकता। इसमें मैंने बहुत कुछ सीखा। छोटा चित्र को कभी बड़ा नहीं बना पाता था। छोटा चित्र है तो छोटा ही बनता था। पर इस बार मेरे जीवन में एक नया अधिगम हुआ। छोटा चित्र को ग्राफ विधि के द्वारा बहुत बड़ा बनाना सीखा और बनाया भी। जब बन गया तो इतनी खुशी हुई कि मेरा मन हर्सोंउल्लास से झूम उठा। चित्र पर रंग भरने सीखा। चेहरे का रंग भरना नहीं आता था, उसे बखूबी सीखा। इससे चित्र कि सुंदरता भी बढ़ गयी। कहा जाता है, जबतक ठोकर नहीं खाएँगे, तबतक दर्द मालूम नहीं होगा। उसी प्रकार जबतक हम गलती नहीं करेंगे, तबतक नहीं सीखेंगे।

अमित एक्का
द्वितीय वर्ष 'अ'

ड्रॉइंग क्लास

कहा जाता है कि कभी-कभी लम्हे कैसे बीतते हैं पाता ही नहीं चलता। ठीक वैसे ही ये तीन दिनों का ड्रॉइंग क्लास बिता मेरे लिए। जैसे ही मुझे पता चला कि हमें ड्रॉइंग क्लास दी जाएगी, मैं बहुत खुश हुई, क्योंकि मुझे ड्रॉइंग करना बहुत पसंद है। थोड़ा बहुत मुझे आता था, लेकिन क्लास मिलने के बाद सही तरीका सीखने को मिला। अब कोई भी पेंटिंग को बनाने के लिए मुझे सोचना नहीं पड़ता है। सब के साथ कैसे ये तीन दिन हँसते-खेलते बीता पता ही नहीं चला। सर ने बहुत अच्छा से शुरुआत करने से लेकर अंत करने तक का तरीका सिखाया। सब ने बहुत उत्सुकता, खुशी और मजे में अपना-अपना ड्रॉइंग बनाया। और तो और एक-दूसरे के ड्रॉइंग को देखकर बहुत मज़ाक भी उड़ाया, बहुत हँसा। इस क्लास से ड्रॉइंग और पेंटिंग का एक अलग ही अनुभव मिला।

वत्तिस्ता यादव
प्रथम वर्ष 'अ'

शिक्षक-दिवस

शिक्षक दिवस का महत्व

भारत में शिक्षक दिवस हर साल 5 सितम्बर को डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस पर मनाया जाता है। इस दिन हमारे महाविद्यालय में भी कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जो कि बहुत ही धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस दिन सभी विद्यार्थी अपने गुरुओं को याद करते हैं, जिन्होंने हमारे जीवन में मार्गदर्शक बनकर हमें इस बुलंदियों तक पहुंचाया है। शिक्षक एक अध्यापक ही नहीं, बल्कि वह व्यक्ति होता है, जो जीवन में आगे बढ़ने में हमें मदद करते हैं। इसलिए हमें अपने गुरुओं को आदर और सम्मान देना हमारा फर्ज बनता है।

अमित लुगुन
प्रथम वर्ष 'ब'

शिक्षक की महत्ता

हमारे गुरु हमारे जीवन के असली हीरो हैं, जो हमें ज्ञान की दुनिया से परिचित कराते हैं। गुरु भविष्य के निर्माता होते हैं, जो हमें सफलता के राह पर बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। गुरु ज्ञान के सागर होते हैं, जो हमारे जीवन के हर क्षेत्र में बढ़ने की शक्ति देते हैं। गुरु जीवन के मार्गदर्शक होते हैं, जो हमें सही रास्ते पर चलना सिखाते हैं। गुरु ही देश एवं जीवन के निर्माता है, जो हमें मंजिल तक पहुँचाते हैं।

आज के दिन का इंतजार सभी विद्यार्थियों को रहता है, क्योंकि इस दिन में अपने शिक्षकों के प्रति अपने प्यार को दिखाने का विशेष अवसर रहता है। हमने भी गुरुओं के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित कर अपने प्रेम को दिखाने का प्रयास किया। गुरुओं ने हमारे लिए जो कार्य किए हैं , वो अतुल्य हैं। हम उनके लिए कुछ भी करें वो उनके कार्यों के सामने कुछ भी नहीं है। मैं सभी गुरुओं को सलाम करता हूँ, जो अपने सुंदर जीवन के माध्यम से इस अंधकार एवं अज्ञानता रूपी संसार को जगमगाती दुनिया बनाने के लिए। यह कार्य सिर्फ उनके समर्पण एवं कर्तव्यनिष्ठता के द्वारा ही संभव है।

अनूप बड़ा
द्वितीय वर्ष 'ब'

शिक्षक दिवस पर मेरा अनुभव

5 सितंबर शिक्षक दिवस को मैं बहुत उत्साहित थी, क्योंकि वह दिन सभी शिक्षक-शिक्षिकाओं को समर्पित था। उनके प्रति उदगार एवं आभार प्रकट करने का दिन था। मुझे शिक्षकों को यह कहते हुए हर्ष हो रहा है कि- "आपकी मूरत इस दिल में बस जाती है, हर बात आपकी हमें सिखा जाती है।" मेरी कृतज्ञता है, गुरु दक्षिणा स्वीकार करें, क्योंकि हर कठिन परिस्थिति में आपकी बातें मुझे प्रोत्साहित करता है। सचमुच वह दिन मनमोहक था। मेरे दोस्त-मित्र अपने रंगारंग कार्यक्रम से उस दिन को और भी यादगार बनाये। सभी के चेहरे में मुस्कान थी। शिक्षक मुझे ज्ञान देते, मेरा मार्गदर्शन करते और मेरे जीवन निर्माण में सहायता करते हैं। मेरी कामना है, जीवन की कठिन राहों पर मैं आपकी आशीष चाहूंगी, जो राह आपने दिखायी, मैं भी औरों को दिखलाऊंगी। यह प्रण मैंने इस दिवस पर लिया है।

अलिसा तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

महाविद्यालय में शिक्षक दिवस

5 सितंबर को हमारे महाविद्यालय में शिक्षकों के आदर एवं सम्मान में शिक्षक दिवस मनाया गया और कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे बहुत ही आनंद आया। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के जन्म दिवस पर शिक्षक दिवस मनाया जाता है। डॉ. राधाकृष्णन एक प्रतिष्ठित व्यक्ति, विद्वान और दार्शनिक शिक्षक थे। उस दिन उसकी तस्वीर पर माल्यार्पण किया गया एवं श्रद्धांजलि दी गयी। साथ ही, सभी गुरुओं के लिए प्रार्थना किया गया। शिक्षक बनना आसान है लेकिन शिक्षक होना आसान नहीं है। गुरु ही विद्यार्थियों के जीवन को संवारते हैं। विद्यार्थी के जीवन के पीछे गुरु का हाथ नहीं होगा तो वह कभी अपने जीवन में आगे नहीं बढ़ सकता है। सभी शिक्षकों से प्रेरित होकर मैं एक अच्छी शिक्षिका बनना चाहती हूँ।

अंत में मैं कहना चाहती हूँ कि हम सभी विद्यार्थी अपने गुरुओं का आदर एवं सम्मान करें। शिक्षक वह नहीं जो छात्र के दिमाग में तथ्यों को जबरन ठूसे, बल्कि वास्तविक शिक्षक तो वो है जो उसे आने वाले कल कि चुनौतियों के लिए तैयार करे।

अल्फा कुजूर
प्रथम वर्ष 'ब'

शिक्षक ज्ञान के सागर

शिक्षक दिवस के दिन मेरा मन-दिल खुशी से झूम उठा। सुबह की ठंडी-ठंडी हवाएँ मुझे यूँ ही बहुत सारे ऊर्जा से भर दिये। इसी ऊर्जा और जोश के साथ मैं महाविद्यालय कि ओर चल दिया। वहाँ पहुँचने के बाद नजरें घूमा के देखा तो खुशियाँ-ही-खुशियाँ नजर आ रही थी। सबके चेहरे पर मुस्कान नजर आ रही थी।

यह दिन मेरे लिए बहुत ही खास रहा। मैं इस दिन को अपने महाविद्यालय में बहुत ही उत्साह और जोश के साथ मनाया। हमने अपने शिक्षकों को सम्मानित करने के लिए एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया। हमने उन्हें उपहार देकर भी सम्मानित किया।

यह दिन मुझे याद दिलाता है कि शिक्षकों का योगदान केवल ज्ञान की दुनिया तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इससे बढ़कर वे हमें जीवन के मूल्यों और सिद्धांतों को सिखाते हैं, जो हमारे भविष्य को आकार देने में मदद करते हैं। शिक्षक है तो ज्ञान है, ज्ञान है तो जीवन है। शिक्षक हमारे दिमाग कि बैटरी चार्ज करने वाले चार्जर हैं। शिक्षक हमारे जीवन में सूर्य की किरणों की तरह हैं जो हमें दिन-रात रोशनी देते हैं। इनके पास ज्ञान का भंडार है। इसीलिए इन्हें ज्ञान का सागर कहा जाता है।

अंकित कुल्लू
द्वितीय वर्ष 'ब'

शिक्षक-दिवस

जीवन में शिक्षक का महत्व

हमारे जीवान में शिक्षकों का महत्व केवल पढ़ाई तक सीमित नहीं है। वे हमारे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और हमें अच्छा इंसान बनने में मदद करते हैं।

शिक्षक दिवस हमें यह सुअवसर प्रदान करता है कि हम अपने शिक्षकों को धन्यवाद कह सकें और उनके द्वारा दिये गए ज्ञान को अपने जीवन में उतार सकें।

शिक्षक का हर मानव के जीवन में विशेष स्थान होता है। यह शिक्षक ही है जो किसी मनुष्य को इंसान बनाता है। शिक्षक का स्थान मानव जीवन में भगवान और माता-पिता से भी ऊपर है। शिक्षक अपने शिष्य के जीवन के साथ-साथ उसके चरित्र निर्माण में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कहा जाता है कि इंसान की पहली शिक्षिका माँ होती है, जो अपने बच्चों को जीवन प्रदान करने के साथ-साथ जीवन के आधार का ज्ञान भी देती है। इसके बाद अन्य शिक्षकों का स्थान होता है। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण करना बहुत कठिन कार्य है। व्यक्ति को शिक्षा प्रदान करने के साथ-साथ उसके चरित्र और व्यक्तित्व का निर्माण करना उसी प्रकार का कार्य है। जैसे- कोई कुम्हार मिट्टी से बर्तन बनाने का कार्य करता है, उसी प्रकार शिक्षक अपने छात्रों को शिक्षा प्रदान करते हैं।

अंजली टोप्पो
द्वितीय वर्ष 'ब'

शिक्षक दिवस

यह दिन हमें याद दिलाता है कि शिक्षा की शक्ति और शिक्षकों की भूमिका एवं समाज के विकास में बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस दिन सर नीरज ने प्रेरणा भरी कहानी से हम सभों को अवगत कराया एवं जीवन के मार्ग में सफल होने के लक्ष्य के बारे में बतलाए। सभी कार्यक्रम मनमोहक थे। सभी ने अलग-अलग राज्य के लोकनृत्य को प्रस्तुत किया। वेषभूषा बहुत ही सुंदर था। सभी अपने अंदर के गुणों, प्रतिभा एवं कला को प्रदर्शित किए। आत्मिक शांति का अनुभव हुआ।

शिक्षक हमें जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया अपनाना सिखाते हैं। कहा जाता है कि वक्त हमें बहुत सिखा जाता है। कहना चाहूंगी कि वक्त और शिक्षक दोनों सिखाते हैं। दोनों में फर्क सिर्फ इतना ही है कि शिक्षक सिखा कर इम्तिहान लेता है और वक्त इम्तिहान लेकर सिखाता है।

आभा सोरेंग
द्वितीय वर्ष 'ब'

सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का अनुभव

हमारा सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना कौशल-1 29 अगस्त से शुरू हो गया था। शुरुआत में जब मुझे इसके बारे में पता चला तो मुझे जानने की जिज्ञासा हुई, कि आखिर इन कौशलों में होता क्या है। फिर जब मुझे इन कौशलों के बारे में शिक्षकों के माध्यम से पता चला, तो बहुत डर लगा, क्योंकि मैं कभी इस तरह से आगे नहीं आयी थी। परंतु मैंने महसूस किया कि इन सब बातों को याद करके क्या फायदा। फिर पता चला कि जो भी विषय पढ़ा रहे हैं उस पाठ से संबंधित चित्र या मॉडल भी तैयार करना है, जो की मेरे लिए चुनौती भरा था, क्योंकि मुझे चित्र बनाना नहीं आता था। शुरुआत में बहुत ज्यादा दिक्कत हुई, फिर धीरे-धीरे थोड़ा-बहुत अब बना लेती हूँ।

जब मैं कौशल-1 का अभ्यास की तो मुझे बहुत सारे समालोचनायें भी मिली। जिससे मुझे ऐसा लगा कि मैं अपनी कमियों को इस समालोचना के आधार पर पूरी कर सकती हूँ। शुरू का दिन अच्छा ही गुजरा। लेकिन उसके दूसरे दिन से बहुत दर लगने लगा। जो भी तैयारी करके जाती थी, उसे सामने जाते ही भूल जाती थी और बोल नहीं पाती थी। ऐसा लगता था कि मैं सही बोल भी रही हूँ या नहीं। दूसरों को मेरी बातें समझ में आ भी रहा है या नहीं। ये सारे प्रश्न मेरे मन में चलते रहते थे। फिर मैं धीरे-धीरे विषयों को समझने लगी और अपने-आप में लगने लगा कि मैं अगर कोशिश करूँगी तो अच्छा कर सकती हूँ। लेकिन इतने कौशल होने के बावजूद मुझमें वो आत्मविश्वास और बोलने की क्षमता नहीं आ पा रही थी।

अब मुझे सबकी जानकारी हो गई है। मैंने सभी कौशलों को समझ लिया है और अब मैं सभों को समालोचना देती हूँ। साथ ही, जब आगे जाती हूँ तो अच्छे से बोल पाती हूँ तथा दूसरों को समझा पाती हूँ।

अलिसा बड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का अनुभव

जब मैंने माइक्रो-टीचिंग शब्द सुना तो मुझे आश्चर्य हुआ, क्योंकि मैं इस शब्द से परिचित नहीं था। जब मैं सूक्ष्म-शिक्षण अभ्यास का नमूना देखा और सुना, तब पता चला कि सूक्ष्म-शिक्षण शब्द पढ़ाने का अभ्यास होता है।

मेंटोर ग्रुप में जब प्रथम बार पढ़ाने का अवसर मिला, तो मन में डर और भय की भावना उत्पन्न हो रही थी। फिर भी साहस और दृढ़ता से पढ़ाने के लिए गया तो कुछ ऐसे शब्द थे जो बोलने और समझाने में लड़खड़ा रहा था। इस परिस्थिति से निकलने में द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षणार्थियों का बहुत सहयोग मिला। जिससे मैं धीरे-धीरे मेरे आत्मविश्वास और बोलने की क्षमता में परिवर्तन आया।

सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के दौरान बहुत सारी नई और अच्छी चीजों जैसे- एक्शन सॉन्ग, बोलने की कला तथा पढ़ाने का तरीका आदि को सीखा।

नवीन कुल्लू
प्रथम वर्ष 'अ'

सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का अनुभव

सूक्ष्म शिक्षण को जानना और समझना शिक्षक के लिए बहुत ही जरूरी है। मैं भी अपने-आपको शिक्षक बनने के लिए तैयार कर रहा हूँ। मैंने भी सूक्ष्म शिक्षण के कौशलों को अच्छी तरह से समझ लिया है और आशा करता हूँ कि ये सारे कौशल मुझे मेरे शिक्षक जीवन में बहुत मदद करेंगे।

आकाश तिर्की
प्रथम वर्ष 'अ'

Experience of the Micro-Teaching

When I heard about the name of micro-teaching, I was very much disturbed and wondering that how it would be. At the same time I was extremely frightened because I was unfamiliar with the idea that what would be the modes of teaching practice.

However, as the micro-teaching practice got started on 29th September with the demo by the lecturers, even then I was afraid. Afterwards, when my turn came to perform, then I was immensely afraid and shaking, unable to stand in front of my colleagues, didn't know what to speak. I was completely lost. I observed that I was feeling heat within me. After practicing so many times, I was able to speak out what I persumed during the practice. Overall, micro-teaching practice helped a lot to build up my self-confidence and stand over courageously in front of the trainees. It was very effective and offered me to be a good teacher.

Pawan Kujur
First Year "A"

सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का अनुभव

सूक्ष्म शिक्षण के दौरान मुझमें बहुत सारे परिवर्तन हुए। जब मुझे सभों के सामने आकार अभ्यास करने को कहा गया तो डर के मारे मेरे पैर काँप रहे थे। लेकिन मैंने हार नहीं मानी और कैसे भी करके पढ़ाया। बाद में मुझे बहुत समालोचना मिली। मैंने और अधिक अभ्यास करना शुरू किया, तब सभी बोलने लगे कि बहुत अच्छा कर रहे हो, आवाज़ में और थोड़ा दम लगाओ। मैंने अपनी आवाज़ बुलंद की और इस तरह मेरा आत्मविश्वास बढ़ने लगा। धीरे-धीरे करके मैंने सारे कौशल अच्छी तरह से पढ़ाया। मेरा पढ़ाया हुआ सबको बहुत अच्छा लग रहा था। सभी सुनने में रुचि दिखा रहे थे। जब मैंने सम्पूर्ण पाठ योजना किया, तब मुझे अत्यंत खुशी हुई क्योंकि मैं सबसे पहले गया था।

सूक्ष्म शिक्षण के दौरान मैंने जो कुछ भी सीखा इसमें सबसे पहले मैम और फिर मेरे दल के प्रशिक्षणार्थी बहुत मदद किए। मुझे एक चीज़ बहुत अच्छा लगा कि कितना ही कमजोर बच्चा रहे उसे शिक्षण कौशल बदल कर रख देता है।

सागर मोदी
प्रथम वर्ष 'अ'

सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास अनुभव

सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना के पहले दिन शिक्षकों के द्वारा डेमो प्रस्तुत किया गया। पहला दिन कौशल-1 प्रस्तावना निकालने सिखाया गया। उसके बाद अपने-अपने मेंटोर ग्रुप में सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास के लिए भेजा गया। जहां हमने एक-एक करके कौशल-1 का प्रदर्शन किया। प्रस्तावना प्रश्न निकालने में थोड़ी कठिनाई हुई, लेकिन फिर समालोचना मिलने के बाद दुबारा प्रदर्शन किया, जो पहले की तुलना में काफी अच्छा रहा। पहले मुझे डर लग रहा था, लेकिन पुनः प्रदर्शन के बाद अपने-आप में आत्मविश्वास बढ़ा और अच्छा कर पाया। प्रत्येक दिन विषय शिक्षकों के द्वारा प्रत्येक कौशल का प्रदर्शन किया गया। इस तरह से सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास में मैंने सात कौशल को सीखा। सातों कौशलों का अभ्यास हमने सात दिनों तक अपने ही दल में किया। इस तरह मैं पढ़ाने के विभिन्न कौशलों को सीखा। साथ ही, अन्य सह-प्रशिक्षणार्थियों से भी नए-नए ज्ञान की जानकारी मिली। एक कुशल शिक्षक होने के लिए सभी कौशलों के बारे में जानना बहुत आवश्यक है।

सिगिन मुंडा
प्रथम वर्ष 'अ'

सूक्ष्म शिक्षण कौशल का अनुभव

शिक्षकों के द्वारा सूक्ष्म शिक्षण पाठ योजना का डेमो प्रस्तुत किया गया। इससे मुझे सूक्ष्म शिक्षण के बारे में जानकारी मिली। शुरुआत में दिल में बहुत ही भय था। यह सोचकर कि सभों के सामने जाकर बोलना पड़ेगा। फिर भी, जब पहला कौशल को अपने मेंटोर ग्रुप में अभ्यास का मौका मिला तो अंदर ही अंदर बहुत घबरा रहा था, लेकिन सीनियर्स की मदद से आत्मबल मिला। और अच्छा कर पाया।

अमृत लकड़ा
प्रथम वर्ष 'अ'

सूक्ष्म शिक्षण अभ्यास का अनुभव

यह मेरे लिए बहुत ही चुनौती भरा समय था,क्योंकि मुझमें सामने जाकर कुछ कराने या बताने का साहस बिलकुल नहीं था। सूक्ष्म शिक्षण का पहला दिन जब मुझे पहली बार सामने जाकर पाठ का प्रस्तावना निकालने का मौका मिला, तब क्लास में घुसने से पहले ही मेरी धड़कन तेज हो गई थी और डर के मारे कांपने लगी। जैसे ही मैंने प्रस्तावना निकालने के लिए action song कराना शुरू किया, मेरा डर धीरे-धीरे कम होता गया। इसी प्रकार मैं दिन-प्रतिदिन डर को हराते गई और कौशल 7 तक पहुँचते-पहुँचते मुझमें काफी साहस एवं आत्मविश्वास हो गया। इसका कारण यह है कि मुझे सूक्ष्म शिक्षण के दौरान अपने ही सहपाठियों तथा मेंटोर गाइड से अनेक प्रोत्साहन तथा समालोचनाएं भी मिले ताकि मैं मेरे पढ़ाने के तरीके को और अच्छा कर सकूँ। यह मेरे लिए बहुत ही लाभदायक सिद्ध हुआ।

तनवी केरकेट्टा
प्रथम वर्ष 'अ'

शिक्षण अभ्यास का अनुभव

हम चार अनजान प्रशिक्षणार्थी
निकल पड़े अपने विद्यालय की खोज में
विद्यालय हमारा है कोर्रा चौक के क्रोंच में
हम चार अनजान प्रशिक्षणार्थी
भेंट-मुलाकात किए विद्यालय परिवार से

मिलकर हमसे भावुक था विद्यालय परिवार
ज्यों ही सुने सीतागढ़ शिक्षण संस्था के नाम
खिल सा गया था उनका चेहरा
हमारा भी हृदय हो गया गदगद पाकर स्वीकृति

हम चार अनजान प्रशिक्षणार्थी
थे न अजनबी वहाँ
घुल-मिल गए थे सब बच्चे, शिक्षक
लगनता देख हमारी बच्चे जल्द विद्यालय आते

बच्चे हमसे पढ़ना-सीखना चाहते जुनून से
हम भी उन्हें सीखते बड़े प्रेम से
हर दिन नया, कुछ नया, सीखते-सिखाते
सुनकर "मैम" शब्द बच्चों से
खुश-सा हो जाता हमारा हृदय
इस प्रकार शिक्षण अभ्यास जारी
है हमारा क्रोंच कन्या में।

अलिसा तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

शिक्षण अभ्यास का अनुभव

मन के कच्चे, सच्चे बच्चे
आओ तुम्हें सिखलाएँ हम
स्वच्छ अनुशासन में रहकर
कदम कैसे बढ़ाएँ हम।
तुम हो कल के वीर सिपाही, नेता
यदि न्याय को समझते हो
आओ हम सब मिलकर
ईमानदारी का पाठ पढ़ें
यदि कदम बढ़ाते हो तो
तुम निडर बन जाओगे
अपने मन के सपने को
तुम सफल कर पाओगे।
मन के कच्चे, सच्चे बच्चे
आओ तुम्हें बतलाएँ हम
विश्वास, दया, प्रेम और
सहयोग ही है, मानवता का रंग।

करीना तिर्की
प्रथम वर्ष 'ब'

शिक्षण अभ्यास के वो दिन

शिक्षण अभ्यास के वो सुहावने दिन
गजब का था वो पहला दिन
मन में थी बच्चों को पढ़ाने की उमंग
भरे थे हम जोश, उमंग और खुशी से
पता नहीं कैसा होगा वह पहला दिन ॥

शिक्षण अभ्यास का अनुभव अच्छा ही रहा. शुरू-शुरू में हमें उस परिवेश में ढलने के लिए दो दिन का समय लगा. लेकिन हमें वहाँ के बच्चों के साथ घुलने-मिलने में ज्यादा समय नहीं लगा. बच्चे हमारी बातों को अच्छी तरह से सुनते और समझते थे. लेकिन शरारतें भी काफी ज्यादा करते थे. जब उन्हें पढ़ने का मन नहीं होता, तो हमारी सारी कोशिश नाकाम होती थी. उन्हें गाना गाकर नाचना ज्यादा पसंद आता था. बहुत ही अच्छा अनुभव रहा. साथ ही बच्चों ने भी हमें बहुत प्यार दिया.

छाया रानी धान
प्रथम वर्ष 'ब'

एक एहसास

निकल पड़े अनजान गलियों, सुनसान राहों पर
मन में थी घबराहट कि अब होगा कैसे
सनसनी हवाएँ कहते मुझसे डरना क्या है
जब दोस्त हैं तीन तुम्हारे जैसे।

उमड़ पड़ी यादें गुजरे उस पल की
भूले-भटके हम भी थे उन बच्चों से
अंधेरे में वो गुम कहीं राह न दिखती
दिया जलाकर हम भी खड़े उम्मीदों की।

सचिन मारंडी
प्रथम वर्ष 'ब'

शिक्षण अभ्यास अनुभव

पहले मुझे यह अनुभव होता था कि मैं बच्चों को किस प्रकार शिक्षा दूँ। ये सारी बातें सोचकर बहुत चिंतित रहती थी। लेकिन मुझमें एक दृढ़ इच्छा जगी चूँकि मैं एक शिक्षक हूँ तो कर्तव्य बनता है कि सभी बच्चों को समान रूप से जीवन के मूल्यों की जानकारी दूँ। केवल किताब से शिक्षा नहीं दी जाती है, बाहरी वातावरण जैसे- समाज के साथ कैसे रहना है, माता-पिता का आदर करना, गुरुजनों का सम्मान करना, प्रेम की भावना जागृत करना आदि बातों से बच्चे के भविष्य को उज्ज्वल बनाने का प्रयत्न किए जाते हैं।

मुझे बच्चों को पहली बार पढ़ाने का एक सुनहरा अवसर मिला। इसमें बच्चों का एकरूपता दिखाई, पढ़ने की इच्छा, विभिन्न कार्यों को करने के लिए हमेशा आगे-आगे होते थे और जो मैं बोलती थी, बच्चे मेरी ही अनुसरण करने की कोशिश कर रहे थे। इससे पता चलता है कि वे एक अच्छे व्यक्ति बनने का प्रयास कर रहे हैं और बच्चे मुझसे यह आशा करते थे।

रीना तिग्गा
प्रथम वर्ष 'अ'

शिक्षण अभ्यास का अनुभव

शिक्षण अभ्यास का पहला दिन खुशी और घबराहट भरा रहा। जब बच्चों को पढ़ाना शुरू किया तो मुझमें बहुत सारी कमियाँ नजर आयी। कमियों को ध्यान में रखते हुए मैंने आने वाले दिनों की कक्षाओं के लिए अभ्यास में ज्यादा समय देने लगा तो पाया कि कमियों में सुधार दिखने लगा और बच्चे भी मेरी कक्षाओं में ध्यानपूर्वक पढ़ने लगे। यह शिक्षण अभ्यास मेरे लिए अपनी क्षमताओं को पहचानने और आत्ममंथन का समय था। उसका मैंने खूब फायदा उठाया। अपनी कमियों को पहचाना एवं उनको दूर करने कि कोशिश की।

विनोद कुमार यादव
प्रथम वर्ष 'अ'

Rangoli Competition during TP

Rangoli competition was organized by the Primary Junior Section Teachers. Four of us were welcomed. It was my 1st day of teaching practice in P.S. First time I got chance to observe/judge during rangoli competition.

I saw the students were in proper discipline in their own group. They were excited to make the rangoli. All the groups made beautiful ranlolies. They were neat & clean. By seeing their interest in their own group unity, varieties of rangoli, all the teachers were pleased.

Rajni Xalxo
First year 'B'

शिक्षण अभ्यास का अनुभव

शिक्षण अभ्यास का पहला दिन बहुत ही अच्छा रहा। विद्यार्थियों और शिक्षकों के द्वारा अच्छे तरीके से स्वागत किया गया। जब में पहला क्लास लेने गया तो बच्चे बहुत ही खुश दिखाई दिये। मैंने उनसे खुश होने का कारण पूछा तो उनका कहना था कि विद्यालय में नए शिक्षक एवं नए चेहरे देखने को मिले। बच्चों से परिचय प्राप्त कर मैंने एक एक्शन सॉन्ग कराया। फिर तो बच्चे और ही ज्यादा खुश हो गए। साथ ही वे एक्टिव हो गए और पढ़ाई में भी मन लगाने लगे। क्लास के दौरान जब भी मैं सवाल पूछता था, बच्चे उसका उत्तर अच्छी तरह से देते थे। तो मुझे भी पढ़ाने में अच्छा लगता था। त्यौहारीय छुट्टी के बाद वहाँ के प्रधानाचार्य फोन करके बोलते थे कि जल्दी आइये, आपलोगों को बच्चे बुला रहे हैं। सुनकर अच्छा लगता था।

आसीत लकड़ा
प्रथम वर्ष 'ब'

ईश सेवक फादर कॉन्सटंट लीवन्स

फादर कॉन्सटंट लीवन्स ईश्वर के प्रेम की आग से प्रज्वलित थे। उनमें ईश्वर की शक्ति को स्पष्ट देखा जा सकता है। उनका जन्म 10 अप्रैल 1856 को बेल्जियम के मूरसेलेदे में हुआ था। मानव सेवा से प्रेरित होकर उन्होंने 1878 में येसु समाज में प्रवेश किया और 1880 में मिशनरी बनकर भारत आये। 1883 में पुरोहित अभिषेक के बाद उन्होंने कुछ समय के लिए पढ़ाई में व्यतीत किया उसके बाद 1885 में छोटानागपुर आये।

छोटानागपुर जो आज झारखंड कहलाता है उन दिनों वहाँ के लोग जमीनदारों के चंगुल में थे एवं गरीबी, अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार आदि कई विकट समस्याओं का सामना कर रहे थे। फादर लीबंस ने छोटनागपुर में सालों-साल की अपनी प्रेरिताई में दिन-रात मेहनत कर बहुत सारे लोगों को जमीनदारों के चंगुल से छुड़ाया और उनके बीच ख्रीस्त की ज्योति जलायी।

कठोर परिश्रम और त्याग करने के कारण वे अधिक दिन छोटानागपुर में नहीं रह पाये और 7 नवम्बर 1893 को 37 साल की उम्र में बेल्जियम में उनका निधन हो गया। उनके पवित्र अवशेष को 7 नवम्बर 1993 को राँची लाया गया तथा संत मरिया महागिरजाघर में स्थापित किया गया है।

(संभार : विकिपीडिया)

	Orders
Ordination	14 January 1883
Personal details	
Born	Constant Lievens 10 April 1856 Belgium
Died	7 November 1893 (aged 37) Leuven, Belgium

धान कटनी

धान हमारे देश का मुख्य फसल है। भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा चावल का उत्पादक देश है। यहाँ के अधिकतर लोग कृषि पर ही निर्भर रहते हैं। अतः हमारा देश एक कृषि प्रधान देश है। धान कृषि परम्पराओं, जीविका और समुदाय का प्रतीक है। धान की खेती के लिए बोआई से लेकर कटाई तक काफी मसक्क्त करनी पड़ती है। इसके लिए काफी पानी की भी जरूरत पड़ती है। अतः धान की खेती प्रायः मानसून के आने पर ही की जाती है। धान की कटाई अक्टूबर-नवम्बर माह में की जाती है। धान की खेती प्रायः समूह में ही संभव हो पाता है। हमें भी हमारे महाविद्यालय में धान की कटाई करने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। धान की रोपाई के बाद हम इसी इंतजार में थे कि कब फसल तैयार हो और हमें फिर से एक साथ कार्य करने का मौका मिले।

मैं धान कटनी के लिए काफी उत्साहित था। सभी इस कार्य के लिए खुश नज़र आ रहे थे। हम सभी अपने-अपने समूह में जाकर धान कि कटाई शुरू किए। सारा खेत संगीतमय हो गया था। प्रशिक्षणार्थियों के संगीत से ही यह प्रतीत होता था कि वे कितने खुश थे। काम अधिक था पर लोगों के उत्साह और जोश के सामने सभी कार्य आसान हो गए। सभों ने पूरी ईमानदारी से यह कटनी कार्य को अंजाम दिया। दोपहर में स्वादिष्ट भोजन का लुफ्त उठाया और शाम को कार्य समाप्ति के बाद चाय और पावरोटी का आनंद लिया।

समूह में कार्य करने का मजा ही कुछ अलग होता है। नहीं चाहने वाले भी खुशी-खुशी कार्य में अपना हाथ बंटाते हैं। बड़े-बड़े कार्य यूँ ही सिमट जाते हैं।

दीपक बिलुंग
द्वितीय वर्ष 'ब'

धान कटनी का अनुभव

हर वर्ष कि भांति इस वर्ष भी धान रोपणी का कार्य सभी प्रशिक्षणार्थियों के द्वारा किया गया था और जब फसल पूरी तरह से तैयार हो गया तो अब इसे काटने की बारी आयी। सभी प्रशिक्षणार्थी ये बात जानते थे कि जिस फसल को बोया गया है, उसे एक दिन काटना भी है। पर ये हमलोग नहीं जानते थे कि इतने कम समय में ये कैसे हो पाएगा। क्योंकि हम सभी प्रशिक्षणार्थी अपने-अपने शिक्षण अभ्यास में पूरी तरह से व्यस्त थे। ऐसा लग रहा था कि धान कटनी कार्य के लिए जिस प्रकार से उत्साहित होना चाहिए था उस प्रकार की चमक चेहरे पर दिखाई नहीं पड़ रही थी। लेकिन हम सभी जानते थे जो बोया है उसे काटना भी है। इसी उत्साह और उमंग के साथ सभी लोग एकजुट होकर इस कार्य को अलग-अलग समूहों के आधार पर बाँट दिया गया। मैं ये अनुभव कर रहा था कि समूहों में रहने से कुछ भी बड़े काम या बोझ कम हो जाता है। मुझे मेरे मन में समूह के प्रति कुछ ऐसे दोहे याद आने लगे जो कि मैं मन ही मन गुनगुनाने लगा-

साथी हाथ बढ़ाना
एक अकेला थक जाएगा, मिलकर बोझ उठाना
साथी हाथ बढ़ाना
हम मेहनतवालों ने जब भी, मिलकर कदम बढ़ाया
सागर ने रास्ता छोड़ा, पर्वत ने शीश झुकाया
फौलादी है सीने अपने, फौलादी हैं बाँहें
हम चाहें तो चट्टानों में पैदा कर दें राहें
साथी हाथ बढ़ाना।

इस धान कटनी कार्य से प्राप्त अनुभव को मैं अपने दोस्तों को साझा करते हुए कहता हूँ कि हम भी किसी न किसी कार्य के रूप में बोये गए हैं। जिस प्रकार एक बीज को बोया जाता है और वह हरेक परेशानियों से गुजरता है, अनेक विपत्तियाँ आती हैं, लेकिन फसल मजबूती से खड़े होकर मौसम के हर एक चुनौतियों को पार कर लेता है,

चाहे कितनी भी आंधी आए, वर्षा आए और सूखा आए। मैं समझता हूँ कि हमारे जीवन में भी यही परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है। जैसा फसल अपने स्थान पर हर चुनौतियों को स्वीकार कर मजबूती से खड़ा रहता है, वही अच्छा फल लाता है।

मुझे रोपनी और कटनी कार्य से जीवन कि उन परिस्थितियों को इस कार्य द्वारा समझने का अनुभव प्राप्त हुआ। जहां मैं अनेक चुनौतियों से घिरा हूँ। हमें अपने जीवन में उन कठिन परिस्थितियों में स्थिर रहना और हरेक चुनौतियों को स्वीकार करना चाहिए। जिससे हम अपने जीवन में बहुत सारा फल ला सकें। जैसा एक बीज फसल के रूप में तैयार होकर बहुत सारा अनाज लाता है, हमलोगों को भी हरेक चुनौतियों को स्वीकार कर अपने जीवन में बेहत्तर फल लाने एवं अपने कार्यों के द्वारा लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनने की आवश्यकता है।

गोडविन मिंज
प्रथम वर्ष 'ब'

फ्रांसिस ज़ेवियर का जन्म 7 अप्रैल, 1506 ई. को स्पेन में हुआ था। पुर्तगाल के राजा जॉन तृतीय तथा पोप की सहायता से वे जेसुइट मिशनरी बनाकर 7 अप्रैल 1541 ई को भारत भेजे गए और 6 मार्च 1542 ई. को गोवा पहुँचे जो पुर्तगाल के राजा के अधिकार में था। गोवा में मिशनरी कार्य करने के बाद वे मद्रास तथा त्रावणकोर गए। यहाँ मिशनरी कार्य करने के उपरांत वे 1545 ई. में मलाया प्रायद्वीप में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिए रवना हो गए। उन्होंने तीन वर्ष तक धर्म प्रचारक (मिशनरी) कार्य किया। मलाया प्रायद्वीप में एक जापानी युवक से जिसका नाम हंजीरो था, उनकी मुलाकात हुई। सेंट जेवियर के उपदेश से यह युवक प्रभावित हुआ। 1549 ई. में सेंट ज़ेवियर इस युवक के साथ जापान पहुँचे। जापानी भाषा न जानते हुए भी उन्होंने हंजीरों की सहायता से ढाई वर्ष तक प्रचार किया और बहुतों को ख्रीस्तीय धर्म का अनुयायी बनाया।

जापान से वे 1552 ई. में गोवा लौटे और कुछ समय के उपरांत चीन पहुँचे। वहाँ दक्षिणी पूर्वी भाग के एक द्वीप में जो मकाओ के समीप है बुखार के कारण उनकी मृत्यु (3 दिसम्बर, 1552 को) हो गई। मिशनरी समाज उनको काफी महत्व का स्थान देता और उन्हें आदर तथा सम्मान का पात्र समझता, है क्योंकि वे भक्तिभावपूर्ण और धार्मिक प्रवृत्ति के मनुष्य थे। वे सच्चे मिशनरी थे। संत जेवियर ने केवल दस वर्ष के अल्प मिशनरी समय में 52 भिन्न भिन्न राज्यों में यीशु मसीह का प्रचार किया। कहा जाता है, उन्होंने नौ हजार मील के क्षेत्र में घूम घूमकर प्रचार किया और लाखों लोगों को यीशु मसीह का शिष्य बनाया।

संभार : विकिपीडिया

जेवियर दल

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 01)

जिस प्रकार सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार हमारे अनुभवों के भी हैं-अच्छाई और बुराई।

सुझाव :-

1. हमने बच्चों को बहुत उत्सुकतापूर्वक पढ़ाया, जिससे हममें शिक्षण कौशल का विकास हुआ।
2. गानों के साथ-साथ खेल के द्वारा भी बच्चों में पढ़ने के प्रति रुचि बढ़ाये।
3. विद्यार्थियों के घर गए एवं उनके घरों की आर्थिक स्थिति के बारे में पूछताछ की। इस तरह से बच्चों को समझने में आसानी हुई।
4. हमारी उपस्थिति, पढ़ाने के तरीके, अनुशासन एवं समय पाबंदी को देखकर विद्यार्थी और शिक्षक प्रेरित हुए और विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोतरी पायी गयी।

शिक्षण अभ्यास के अनुभव को बेहतर बनाने के लिए सुझाव इस प्रकार है:-

1. विद्यार्थियों को अच्छाई और बुराई के बारे विशेषकर गलत शब्दों का प्रयोग न करने को बतलाना।
2. विद्यार्थियों का ध्यान कक्षा में बनाए रखने के लिए माइक्रो टीचिंग में सुझाव दिया जाए।
3. स्कूल में साफ सफाई अभियान चलित करना जिससे बच्चे स्वच्छता की ओर अग्रसर हो।
4. ऐसे विद्यालय जहाँ विद्यालय प्रांगण में शराब का इस्तेमाल किया जा रहा है वहाँ रैली, नुक्कड़ नाटक गांव मोहल्ले में प्रस्तुत करके इसमें रोकथाम किया जा सकता है।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 03)

विद्यालय आने जाने के संबंध में :- बहुत सारे स्कूल दूर होने की वजह से ज्यादा भाड़ा लिया जाता था। साथ ही हाथी का डर और कहीं-कहीं पर हमारे प्रशिक्षणार्थियों पर बुरी नजरें जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ा था। कुछ लोग पैदल ही अपने स्कूल तक जाते थे।

विद्यालय की व्यवस्था रखरखाव एवं बच्चों के सामाजिक परिवेश :- आर्थिक स्थिति कहीं अच्छी थी और कहीं अच्छी नहीं थी। जैसे कि कहीं-कहीं टॉयलेट की कमी, बच्चों की आर्थिक स्थिति बहुत खराब थी और संख्या में कमी पायी गई। नए प्रशिक्षुओं के जाने से संख्या में बढ़ोतरी हुई। वहाँ के शिक्षकों से हमारी सराहना की गई। विद्यार्थियों एवं प्रधान शिक्षकों से हमारा संबंध बहुत अच्छा था और सहयोग एवं समर्थन मिला। शिक्षण अभ्यास के दौरान हममें आत्मविश्वास, धैर्य, अनुशासन, भाषा शैली में वृद्धि हुई, जो हमें भविष्य में एक बेहतर शिक्षक बनने में मदद करेगा।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 02)

विद्यालय आने जाने के संबंध में :- हमारे ग्रुप में ऑटो और बाइक के द्वारा विद्यालय आना जाना हुआ किसी को भी कोई परेशानी नहीं हुई।

विद्यालय की व्यवस्था :- ज्यादातर स्कूलों में क्लास रूम की बिल्डिंग पानी और वॉशरूम की कमी थी।

बच्चों के सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश :- ज्यादातर स्कूलों के विद्यार्थियों की सामाजिक और आर्थिक परिवेश अच्छी नहीं थी वह इस प्रकार बच्चों का वेष भूषा सही नहीं था। हत्यारी में हड़िया बेचने के कारण वहाँ के माता पिता बच्चों को विद्यालय नहीं भेज पाते थे। दीपुगढ़ा में अधिकतर बच्चों के माता-पिता की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं रहने के कारण अपने बच्चों को दूसरों के घर में बच्चे पालने का था जिससे वे जल्दी चले जाते थे।

विद्यार्थी की कुल संख्या एवं उपस्थिति :- अधिकतर स्कूलों में कुल संख्या लगभग ठीक थी लेकिन दैनिक उपस्थिति थोड़ा कम रहता था।

बच्चों का शैक्षणिक स्तर :- जो बच्चे विद्यालय में रोज़ उपस्थित होते थे वे पढ़ने में ज़्यादातर ठीक ही थे और कुछ बच्चे अनुपस्थित होते थे उनके माता-पिता की लापरवाही के कारण वे थोड़ा कमजोर थे।

प्रधान शिक्षक एवं अन्य शिक्षकों का सहयोग :- प्रायः सभी स्कूलों में ठीक था।

संबंधित विद्यालय के बच्चों के साथ प्रशिक्षुओं का संबंध :- बच्चों के साथ सभी प्रशिक्षुओं का संबंध अच्छे थे और सभी घुलमिल गए थे।

प्रशिक्षुओं के बीच सहयोग और आपसी समर्थन :-इसमें लगभग सभी प्रशिक्षुओं ने एक दूसरे का हमेशा सहयोग किया।

विद्यालय में उपलब्ध टीएलएम :- लगभग सभी विद्यालयों में कक्ष एक और दो में टीएलएम की व्यवस्था थी। उसका प्रयोग भी करते थे।

आप की सफलताएं एवं कोई विशेष सीख का अनुभव :- परिस्थिति चाहे जैसे भी हो हम उनके अनुसार ढालने की कोशिश की उसी में बेहतर करने का प्रयास किया।

बेहतर प्रदर्शन करने का क्षेत्र :- कैंपस की कमी थी यदि रहती तो बच्चों को ऐक्टिविटी द्वारा सिखाया जा सकता था क्लास रूम की कमी के कारण सही ढंग से शिक्षण कार्य नहीं हो पाया।

हम सभी अपने शिक्षण अभ्यास से पूरी तरह संतुष्ट तो नहीं थे क्योंकि बहुत ही स्कूलों में छात्रों एवं कक्षाओं की कमी थी जिससे पठन-पाठन में दिक्कत होती थी।

सुझाव :- शिक्षण कार्य से पूर्व विद्यालय एवं विद्यालय के कक्षाओं के साथ छात्रों की संख्या का निरीक्षण कर हमें उन स्कूलों में भेजने की व्यवस्था की जाए ताकि प्रशिक्षुओं अपना प्रशिक्षण कौशल का प्रदर्शन सही रूप से कर सके

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 04)

हम सभी अपने आवागमन के साधनों का स्वयं प्रबन्ध कर अपना शिक्षण अभ्यास किया। आवागमन में थोड़ी बहुत परेशानियां हुई पर सभों ने इन परेशानियों को स्वीकारते हुए अपने-अपने विद्यालयों में शिक्षण अभ्यास किया। विद्यालय अपने मन के मुताबिक तो नहीं थे कहीं बहुत सारे साधन थे तो कहीं शिक्षण साधनों, विद्यालय के रखरखाव आदि में कमी पाई गई। विद्यार्थी ज्यादातर गरीब परिवार से थे। उन्हें देखकर ही उनके स्थिति का पता चल जाता था, पर बच्चे पढ़ने के लिए उत्सुक दिखाई पड़ते थे। हमारे आने से बच्चों की खुशी और उत्साह और बढ़ गई। प्रकृति के कष्टों से भी बच्चे नहीं घबराए और उनकी उपस्थिति में कभी कमी नहीं देखी गई। बच्चों का शैक्षणिक स्तर बहुत अच्छा तो नहीं था। हमने पूरी लगनता से उन्हें शिक्षा देने का प्रयास किया। हमारे मेहनत से बच्चे बेहद खुश थे। हमने शिक्षण के लिए सभी शिक्षण सामग्रियों का प्रयोग किया। कुछ सामग्री हमने स्वयं निर्माण किया, कुछ विद्यालय के माध्यम से प्राप्त हुए। हमें शिक्षण अभ्यास की जानकारी पहले से ही था। आत: इसके लिए हम पूर्ण तैयार थे। हमने अपने महाविद्यालय में जो भी शिक्षण प्राप्त की थी उसे पूरी तरह से व्यवहार में लाया। हमें पर्याप्त समय और अवसर मिला, जिससे हम अपने शिक्षण अभ्यास के दौरान अपने कौशलों का विकास कर पाये।

सुझाव:- शिक्षण अभ्यास के दौरान पूर्ण रूप से विद्यालय के प्रति समर्पित हो। बीच बीच में महाविद्यालय में कक्षाएं न हों।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 05)

1.नव प्राथमिक विद्यालय सिरका के प्रशिक्षुओं को छोड़कर सभी प्रशिक्षणार्थियों को आने जाने की सुविधा संतोषजनक रहा।

2. प्राथमिक विद्यालय बक्सपुरा, राजकीयकृत मध्य विद्यालय कोलघटी, इन विद्यालयों को छोड़कर सभी विद्यालयों का रखरखाव अच्छा रहा।

3. उर्दू मध्य विद्यालय मंडई को छोड़कर सभी विद्यालयों के सामाजिक, आर्थिक स्थिति सामान्य रही।

4. सभी विद्यालयों में विद्यार्थियों की संख्या संतोषजनक पाई गई।

5. निचली कक्षाओं के विद्यार्थियों का बेसिक स्तर संतोषजनक नहीं पाया गया।

6. राजकीयकृत मध्य विद्यालय और ओरिया के सहायक शिक्षकों का सहयोग सकारात्मक नहीं रहा।

7. संबंधित विद्यालयों के विद्यार्थियों के साथ संबंध सराहनीय रहा।

8. सभी प्रशिक्षुओं का आपसी संबंध बहुत ही अच्छा रहा।

9. सभी विद्यालयों में उपस्थित टीएलएम का प्रयोग भरपूर किया गया।

10. प्रशिक्षुओं में अनुशासन, आत्मविश्वास, धैर्य, समायोजन की क्षमता एवं कौशल का प्रयोग करने की क्षमता का विकास हुआ।

11. बच्चों के खेल हेतु प्रावधान की कमी होने के कारण खेल एवं अन्य क्रियाओं को करने में सक्षम नहीं हो पाए। 12. माइक्रो टीचिंग सेशन बहुत सहायक हुआ, और साथ ही साथ समालोचना कुशल एवं सक्षम बनाने में मदद मिली। इसे जारी रखने से हमें मदद मिलेगी।

सुझाव:- टीचिंग प्रैक्टिस के बीच में गैप नहीं होना चाहिए। माइक्रो टीचिंग के तुरंत बाद टीचिंग प्रैक्टिस होने से और बेहतर होगा। टीचिंग प्रैक्टिस के अंतिम दिन में पाठिका एवं अन्य सामग्रियों को जमा नहीं किया जाने से अच्छा होगा। विद्यालयों की सही जानकारी हेतु विद्यालय के प्रभारी शिक्षक का नाम एवं मोबाइल नंबर होना जरूरी है।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 06)

हम सभी प्रशिक्षुगण प्रथम एवं द्वितीय वर्ष एक दूसरे के समायोजन से इस शिक्षण अभ्यास को उत्कृष्ट तरीके से पूरा किया। विद्यालयों की व्यवस्था में कमी के बावजूद हमने अपना शिक्षण कार्य ससमय पूर्ण किया। बच्चों के आर्थिक एवं सामाजिक परिवेश को ध्यान में रखते हुए हमने उन्हें दैनिक जीवन की सभी प्रक्रियाओं से परिचित कराया। साफ सफाई, अनुशासन, बड़ों का आदर करना जैसे शिष्टाचार बातों को सिखाया। बच्चों के प्रति हमारा समर्पण देखते हुए विद्यालय के प्रधान एवं सहायक शिक्षक का भी भरपूर सहयोग रहा। वे हमें भविष्य के एक अच्छे शिक्षक और शिक्षिका के रूप में देख रहे थे। प्रत्येक समूह में उपस्थित प्रशिक्षु भी एक दूसरे की मदद कर रहे थे।

हम सबों की सबसे बड़ी सीख, अनुभव एवं सफलता यही रहा कि हमलोगों ने बच्चों का मन जीत लिया। उनके चेहरों की मुस्कुराहट हमें अपने दृढ़ संकल्प की ओर ले जा रही थी। हमें महाविद्यालय में जो कुछ भी सिखाया गया था हमने सभी का उपयोग किया। हमने विद्यालय की नकारात्मक बातों को छोड़कर सकारात्मक सोच से बच्चों को आगे बढ़ाने की कोशिश की। सुझाव के तौर पर कहना चाहेंगे कि प्रत्येक विद्यालय में प्रशिक्षुओं की संख्या चार से कम ना हो और जिस विद्यालय में शिक्षण कार्य नहीं दिया गया वैसे अच्छे विद्यालयों को शामिल किया जाए। इस तरह से हम सभी अपने शिक्षण अभ्यास से संतुष्ट हैं और भविष्य में कुछ नया और हमेशा बेहतर करने का निर्णय करते हैं।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 07)

विद्यालय आने जाने के संबंध में :- आने जाने की सुविधा अच्छी रही। सभी ने एक दूसरे का सहयोग किया। थोड़ी परेशानी हुई क्योंकि ऑटो का खर्च दूरी के हिसाब से अधिक हो रहा था।

विद्यालय की व्यवस्था एवं रखरखाव के संबंध में :- इसमें अधिकतर विद्यालय में क्लास रूम का अभाव था। साथ ही कई स्कूलों में श्यामपट्ट ही नहीं था जिसके कारण सही तरीके से क्लास नहीं ले पाते थे। एक ही रूम में दो से तीन क्लास को बैठाना होता था।

बच्चों के सामाजिक और आर्थिक परिवेश :- बच्चों की सामाजिक स्थिति वहाँ अलग-अलग जाति और धर्म के विद्यार्थी आते थे और कभी-कभी जाति और धर्म के बीच लड़ाई भी हो जाती थी। आर्थिक स्थिति अधिकतर बच्चों के माता-पिता मजदूरी करते थे और बच्चों को भी करवाते थे।

बच्चों की कुल संख्या एवं उपस्थिति :- विद्यालय में विद्यार्थियों की उपस्थिति अच्छी थी। जब मौसम खराब था तो बच्चे विद्यालय नहीं के बराबर आते थे।

बच्चों का शैक्षिक स्तर :- विद्यार्थियों का शैक्षिक स्तर अच्छा नहीं था क्योंकि वहाँ शिक्षकों का अभाव होने के कारण सभी बच्चों को ध्यान नहीं दे पाते थे। वहाँ के सभी शिक्षकों का सहयोग हमारे साथ हमेशा रहा। हमें हमेशा अच्छा सुझाव दिए एवं सहयोग किए। सभी प्रशिक्षुओं का सहयोग अच्छा रहा। सबने मिलकर एक दूसरे का सहयोग किया।

टीएलएम का प्रयोग :- स्कूल में टीएलएम था पर उसका प्रयोग नहीं किया जाता था। वहाँ बेकार पड़ा था। **हमें सफलता के तौर पर लगा** कि हमने जूनियर क्लास को संभालना सीख गए जिसे पहले संभालना मुश्किल होता था। जिन बच्चो को अक्षर का ज्ञान नहीं था उन्हें हमने हाथ पकड़कर लिखना सिखाया। पढ़ाने जाते थे तो धैर्य रखने और सहनशील बनना सीखे। सभी को एक समान दृष्टि से देखे।

सुझाव :- एक विद्यालय में चार प्रशिक्षुओं को होना चाहिए। जिस विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या अधिक हो वहाँ और प्रशिक्षणार्थियों को भेजा जाना चाहिए।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 08)

1. विद्यालय आने जाने के संबंध में :- विद्यालय आने जाने में हम सबने एक दूसरे की मदद की। सभी प्रशिक्षु समय से स्कूल पहुँच जाते थे जिससे बच्चे भी हमे देख जल्द ही स्कूल आने के लिए प्रेरित होते थे। प्रार्थना सभा के समय जल्दी आने वाले छात्रों के लिए तालियां बजती थी जिससे वे और अधिक प्रोत्साहित होते थे।

2. विद्यालय की व्यवस्था एवं रखरखाव :-प्रायःसभी विद्यालयों में स्कूल का रखरखाव कुछ खास नहीं था। कुछ विद्यालय की व्यवस्था भी ठीक नहीं थी जिससे हमारे कुछ प्रशिक्षुओं को काफी असुविधा हुई। प्रशिक्षुओं का सामान, पैसे, यहाँ तक की मोबाइल फ़ोन भी चोरी हो गया था।

3. बच्चों का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश : बच्चे प्रशिक्षुओं से बहस करते एवं कभी-कभार गाली गलौज करते थे। बच्चों का शैक्षिक स्तर काफी कम है। प्रायः बच्चे गरीब परिवार से ही आते थे। लगभग सभी दिहाड़ी एवं मजदूरी करने वालों के बच्चे थे।

4. प्रधान शिक्षक अन्य शिक्षकों का सहयोग : शिक्षण कार्य के अलावा अन्य कार्यों में सभी विद्यालयों में शिक्षकों का सहयोग संतोषजनक ही रहा। यदि विद्यालय के शिक्षक हमें शिक्षण कार्य में सहयोग करते तो शायद हम सभी शिक्षण कौशल का बेहतर प्रदर्शन कर सकते थे।

5. प्रशिक्षुओं का बच्चों के साथ संबंध :- हमारा संबंध बच्चों के साथ बहुत ही अच्छा रहा। एक शिक्षक की तरह तो था ही, पर साथ ही एक दोस्त की तरह तथा एक बड़े भाई-बहन की तरह भी था। अंतिम दिन में जब हम सभी विद्यालय छोड़कर जाने की बात कहने लगे, तब सभी मायूस एवं कुछ तो भावुक भी हो गए थे।

6. विद्यालय में उपलब्ध टीएलएम :- लगभग सभी विद्यालयों ने टीएलएम उपलब्ध थे, पर रख रखाव के अभाव में सारे टूटे-फूटे थे। परंतु उनसे भी हमें अपने अभ्यास शिक्षण में काफी सहायता मिली।

7. **हमारी सफलता एवं सीख :-**हमें अपनी कमजोरियों का पता चला जिससे हम उन कमजोरियों पर भविष्य में अधिक ध्यान दे पाएंगे। हमें विद्यालय में असेंबली कंडक्ट कराने का मौका मिला जिससे हमें बहुत कुछ सीखने को मिला। साथ ही हमने सीखा और अनुभव किया कि शिक्षण का कार्य कितना मेहनत एवं धैर्य का काम है। एक चीज़ में हम सब ने बड़ी सफलता पाई कि हम छात्रों को क्लास की गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित कर पाये।

8. भविष्य में शिक्षण अभ्यास के लिए सुझाव :- सभी विद्यालयों में प्रशिक्षुओं की संख्या में बढ़ोतरी करनी चाहिए। महाविद्यालय से अभ्यास शिक्षण से पूर्व विद्यालय को दिए जाने वाले पत्र में प्रशिक्षुओं को शिक्षण के अलावा अन्य कामों में ना लगाए जाने को अंकित किया जाना चाहिए। अभ्यास शिक्षण से पूर्व अच्छी तरह से विद्यालयों के व्यवस्था की जांच पड़ताल कर लेनी चाहिए। त्यौहार सीजन जैसे दशहरा, दीपावली, छठ के पूर्व ही अभ्यास शिक्षण पूरा कर लिया जाना चाहिए।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 09)

1. विद्यालय आने जाने के संबंध में सब का अनुभव अच्छा था।

2. बच्चों का शैक्षिक स्तर कम था लेकिन जाने के बाद बहुत कुछ सीखे जो हमें अच्छा लगा।

3. कहीं कहीं शिक्षकों का व्यवहार हमारे प्रति अच्छा नहीं था लेकिन अधिकतर शिक्षकों का व्यवहार अच्छा था।

4. कहीं कहीं बच्चों में रुचि की कमी होने के कारण हम उन्हें जो सिखाना चाहते थे वो नहीं सिखा पाए।

सीख :-

1. कही कही ऐसा था कि एक क्लास में दो या तीन क्लास के बच्चे एक साथ बैठते थे तो हम लोग क्लास मैनेज करने सीखे।

2. बच्चों को अनुशासन में रखने, स्वयं को अनुशासन में रखने तथा खुद में आत्मविश्वास, आत्मसंयम करने सीखे।

समस्या :- कहीं कहीं बाथरूम और पानी की कमी थी। बच्चों की उपस्थिति रजिस्टर के अनुसार 40% लेकिन दैनिक उपस्थिति 30% थी।

सुझाव :-

1. बच्चों की संख्या या क्लास के अनुसार प्रशिक्षणार्थियों को भेजा जाए।

2. जंगल वाले क्षेत्रों में मिस लोगों को ना भेजा जाए, क्योंकि उनको असुरक्षा महसूस होती है।

3. पाठ योजना, चार्ट पेपर और मॉडल को प्रशिक्षण कार्य के अंतिम दिन नहीं बल्कि उसके 1 दिन बाद जमा किया जाए।

4. कहीं कहीं शिक्षक हमारे टीचिंग मटेरियल को मांग रहे थे तो क्या ऐसा हो सकता है कि उसे कॉलेज में दिखाने के बाद स्कूल को वापस दिया जाए।

शिक्षण अभ्यास का अनुभव (Mentor Gr. 10)

1. **विद्यालय आने जाने के संबंध में** :- बहुत से प्रशिक्षुओं को आने जाने में कोई बाधा नहीं हुई, लेकिन कुछ प्रशिक्षुओं जैसे पावता एवं सिल्वर कला, बड़ासी के प्रशिक्षुओं को बहुत बार आने जाने में असुविधा महसूस हुई।

2. **विद्यालय की व्यवस्था एवं रखरखाव** :- विद्यालय में डेक्स बेंच की सुविधाएं एवं साफ-सफाई था। कक्षा कमरा की व्यवस्थाएँ थी। लेकिन कहीं-कहीं पर वॉशरूम की व्यवस्था नहीं थी। विद्यालय का साफ-सफाई पर ध्यान नहीं दिया गया था।

3. **बच्चों का सामाजिक एवं आर्थिक परिवेश** : सामाजिक स्तर एवं आर्थिक परिवेश अच्छा नहीं था। बच्चे ईटा-भट्टा में काम करने जाते थे। बहुत बच्चे गरीब परिवारों से थे।

4.**विद्यार्थियों की कुल संख्या और दैनिक उपस्थिति** :- बहुत सारे विद्यालय में एक से आठ तक कक्षाएं थी। जनसंख्या अच्छी थी। बच्चे समय पर विद्यालय आते थे, पर बहुत सारे विद्यालय में संख्या बहुत कम थी। जिसके कारण पढ़ाने में असुविधा हो रही थी।

5.**बच्चों का शैक्षणिक स्तर** :-अत्यधिक बच्चे ट्यूशन करते हैं जिसके कारण वे पढ़ाई में अच्छे थे। पर बहुत सारे बच्चों को ट्यूशन की सुविधाएं नहीं थी, इसलिए विद्यालय में पढ़ाई नहीं होने के कारण अक्षर का ज्ञान नहीं था

6. **प्रधान शिक्षक अन्य शिक्षकों का सहयोग** : प्रशिक्षुओं को प्रधान शिक्षक एवं अन्य शिक्षकों का भरपूर सहयोग मिला। परन्तु ओरिया, कोलघाटी के प्रशिक्षुओं को शिक्षकों द्वारा कोई सहयोग नहीं मिला

7. **प्रशिक्षुओं का बच्चों के साथ संबंध :-** आदर व्यवहार में बच्चों के साथ अच्छा संबंध रहा। कुछ विद्यालयों के द्वारा बच्चों के व्यवहार के द्वारा अपमानित एवं आदर नहीं मिला। बच्चे प्रशिक्षुओं के पैसे की भी चोरी किए।

8. **प्रशिक्षकों के बीच सहयोग एवं आपसी संबंध** :- सभी के साथ अच्छा संबंध था

9. **विद्यालय में उपलब्ध टीएलएम** :- विद्यालय में उपलब्ध टीएलएम की व्यवस्थाएँ ठीक रहीं जिसके कारण पढ़ाने में सुविधा हुई एवं बच्चे आसानी से शिक्षा ग्रहण कर पाए। कहीं-कहीं टीएलएम की कुछ भी व्यवस्था नहीं थी

10. **हमारी सफलता एवं सीख :-** बच्चों के साथ उनके व्यवहार के अनुसार अपने को ढालने का अवसर मिला। अनुशासन में रहने का अनुभव एवं रखने का भी। समस्याओं का समाधान करने की सीख मिली। समय पाबंदी। एक दूसरे का सहयोग करने। बच्चों के मानसिक एवं आर्थिक स्थिति को जानने तथा उनके प्रति सहानुभूति दिखाना।

11. **भविष्य में शिक्षण अभ्यास के लिए सुझाव** :- खेल के क्षेत्र, सफाई के क्षेत्र, बागवानी के क्षेत्र और प्रशिक्षण के क्षेत्र में और सुधार करने की आवश्यकता है।

12. **क्या आप अभ्यास शिक्षण के लिए तैयार थे? :-** सभी कोई मानसिक तथा शारीरिक रूप से तैयार थे।

13. **कुल मिलाकर क्या आप अपने शिक्षण अभ्यास से संतुष्ट हैं**? :- कुछ संतुष्ट थे और कुछ नहीं। क्योंकि टीएलएम के आधार पर बढ़ाने का अवसर नहीं मिला। विद्यालय में विद्यार्थियों की संख्या कम थी। विद्यालय में कक्षा की सुविधा नहीं थी। श्यामपट्ट की असुविधाएं।

14. **भविष्य में अभ्यास शिक्षण बेहतर अनुभव सुनिश्चित करने हेतु अपना सुझाव** :- शिक्षण अभ्यास के अंतराल में छुट्टियां नहीं होनी चाहिए। सरकारी स्कूलों में शिक्षण अभ्यास उतना उचित नहीं लगा जिसके कारण प्रशिक्षु उतना सीख नहीं पाते हैं।

Issue 1, Vol. 3
Published on
15 Jan 2025